झूला

मामा, आज लगा दो झूला
हम झूले पर झूलेंगे।
इस पर चढ़कर उछल उछल कर
आसमान को छू लेंगे ।।
झूल रही है डाली डाली
झूल रहा है पत्ता पत्ता।
देखो देखो, इस डाली पर
डोलते फूल, झूमती लता।।
बड़ा मजेदार है यह झूला
ऊपर-जाता नीचे आता।
देखो देखो, इसे छूने को
चंदा मामा भी ललचाता।।
बादल गरजें, चिड़ियाँ बोलें
देखो, कहीं न इसको छू लें।
आओ यारा! हिलमिल खेलें
एक बार सब मिलकर झूलें ।।

तुम्हार काम

इस कविता को याद करो और गाओ।